बालकृष्ण भट्ट की पत्रकारिता में भारतीय संस्कृति

डॉ. कमलेश

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग

राजकीय महाविद्यालय

अंबाला छावनी (हरियाणा)

वर्तमान युग में पत्रकारिता राष्ट्र और विश्व को जागरण के लिए उद्बोधन करने वाला प्रमुख और प्रबल माध्यम है | वर्तमान वैज्ञानिक और कंप्यूटर युग में दृश्य, श्रव्य और दृश्य-श्रव्य संचार माध्यमों से पत्रकारिता में चमत्कारिक विकास हुआ है | पत्रकारिता के इतिहास में बालकृष्ण भट्ट का सर्वथा अप्रतिम एवं अनन्य स्थान है | बालकृष्ण भट्ट हिंदी के अत्यंत प्रतिष्ठित संपादक एवं साहित्यकार थे | इनके पत्रकारिता का जब हम विश्लेष्ण एवं विवेचन करते हैं, तब पाते हैं कि इनका पत्रकारिता का व्यक्तित्व पर्याप्त महिमामंडित और ओजपूर्ण था | पत्रकारिता के क्षेत्र में उनकी उत्कट जिजीविषा का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इनके शिष्यों में पंडित मदन मोहन मालवीय तथा राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने अपने कर्मठ जीवन का प्रारंभ पत्रकार के रूप में ही किया था | बालकृष्ण भट्ट जी ने ' हिंदी प्रदीप ' के द्वारा ऐसी – ऐसी नवीन उद्भावनाएँ करवाई थी जिससे जनमानस सकते में आ गया था | ' हिंदी प्रदीप ' को यदि भट्ट जी के गंभीरचिंतन की संवाहिका कहा जाए, तो अत्युक्ति न होगी | भारतेंदु युग में जब धार्मिक कृत्यों में आडंबर ,रूढ़ियों , अंधविश्वास और संकीर्णता का रूप धारण कर लिया था , तब भट्ट जी ने धर्म की रूढ़ियों और अन्य विषमताओं को तोड़ने के लिए आवाज उठाई है | उन्होंने धर्म की नवीन व्याख्या कर जनमानस को आगे बढ़ने के लिए उद्बोधित किया है |

भारत एक धर्म प्रधान देश है | यहाँ के जनमानस में अपने धर्म के प्रति निष्ठा कूट- कूट कर भरी हुई है | इस देश की संपूर्ण व्यवस्था चाहे वह समाज व्यवस्था हो या फिर शासकीय , इसका संचालन धार्मिक मान्यताओं द्वारा होता रहा है | भारतीय इतिहास साक्षी है कि जब कभी धर्म की हानि के प्रयास हुए हैं, तब सामाजिक एवं धार्मिक क्रांति हुई है | श्री कृष्ण ने ' गीता ' में जन मन को उद्बोधित कर कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने के लिए कहा है –

" यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मनं सृजाम्यहम || " 1

अर्थात जब – जब धर्म की हानि हुई है एवं अधर्म बढ़ा है , कुत्सित , विगलित प्रथाओं ने धर्म को कुंठित करने का प्रयास किया है , तब – तब धर्म की रक्षा के लिए ईश्वर ने धरा पर मनुष्य रूप में अवतरण लिया है, परंतु समय जब बदला तब भारतीय धर्म में दुराचार ने अपना बसेरा बना लिया | ऐसा लगने लगा कि ' गीता ' में कहे गए वाक्य निरर्थक हैं | एक समय ऐसा था कि जब भारत में 15वीं और 16वीं शताब्दियों में कई मार्गदर्शक एवं संत , उपदेशक और धर्म सुधारक पैदा हुए जिन्होंने मध्ययुग के धर्मों को तर्कसंगत बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई | लेकिन 18वीं शताब्दी धार्मिक इतिहास में एक अंधकारमय युग बन गई | कबीर , नानक ,चैतन्य जैसे मध्ययुगीन भक्ति सुधारकों के सामाजिक दर्शन के उपदेश की ध्वनि आने वाले दो शताब्दियों तक सुनने को नहीं मिली | भारतेंदु - युग तक स्थिति और भी भयावह हो गई | इस युग में समाज का धार्मिक दृष्टिकोण लकीर का फकीर बन गया | इस समय " अधिकांश लोगों के लिए धर्म का मतलब था कड़े नियम और प्रतिबंध , यानी क्या खाओ और क्या न खाओ | किसे छुओं और किस से दूर रहो , किस तरह के बरतन में कहां खाना पकाओ या खाओ | कितनी दूर तक की यात्रा की जा सकती है , स्नान किस जगह किया जा सकता है और कौन से मंदिरों में जा सकते हैं |" 2 धार्मिक शुद्धता बनाए रखने के लिए लोगों में असहिष्णुता और कट्टरपंथीपन आ गया | इस प्रकार देश में ऊंच-नीच, जाती-पांति के भेद भाव से आपस में वैमनस्य का भाव कष्टदायक बन गया था |

भारतेंदु - युग में धर्म के क्षेत्र में ह्रास की स्थिति उत्पन्न हो गई थी | भारतीय सभ्यता की जिस शक्ति ने विदेशियों को आत्मसात किया था वह इस युग में लुप्तप्राय: हो चुकी थी और उसका स्थान असत्य , अविवेक तथा अंधविश्वासों व कुप्रथाओं ने ग्रहण कर लिया था | लोगों का धार्मिक जीवन रूढ़िग्रस्त हो गया था | भारत आध्यात्मिक व बौद्धिक दृष्टि से उजाड़ बन गया था | प्राचीन मूल्यों का स्थान कर्मकांड विधि तथा अनुष्ठान ने ले लिया था | जंत्र-मंत्र के प्रभाव में तावीज , जादू , टोना का प्राधान्य हो गया था | धार्मिक रीति - रीवाजों की संख्या में बढोत्तरी हो गई थी | लोग छोटी – छोटी बातों में धर्म की विषम दुहाई देने लगते थे | धार्मिक अपकृत्य लोगों के नस – नस में प्रवेश कर चुका था | लोगों का जीवन धार्मिक कर्म – कांडों में बंधकर दुरूह से दुरुहत्तर होता जा रहा था | उनमें समझने की शक्ति खत्म हो गई थी | लोगों में जड़ता आ गई थी | वे पुरानी लकीर के फकीर बने हुए थे एवं धार्मिक वर्जनाओं की श्रृंखला में दिन पर दिन जकड़ते जा रहे थे | येसे कठिन समय में बालकृष्ण भट्ट ने जनमानस का मार्गदर्शन किया एवं लोगों को इस धार्मिक जकडबंदी से छुटकारा दिलाया | उस समय खान – पान के साथ –साथ जातिगत

संकीर्णता ने लोगों का जीवन दूभर कर दिया था | वरन छोटी – छोटी बात में जाति बहिष्कार की बात आम हो गई थी | आज भी यह स्थिति कई जगहों पर है | भट्ट जी जातिगत भेदभाव के घोर विरोधी थे |

उन्होंने जाति – भेदक नीति पर व्यंग्य करते हुए ' हिंदी-प्रदीप ' में लिखा , '' जाती भेद , वर्ण भेद , संप्रदाय भेद ने समाज को महारोगी, निर्बल और क्षीण कर डाला, किन्तु पराधीनता पिशाची के चंगुल में पड़े हुए इन अनर्थों के हटाने का उद्यम कभी न किया वरन शाखा प्रशाखा के रूप में अनेक कुसंस्कार की जिनकी नीव इन्हीं जाति भेद , वर्ण भेद , संप्रदाय भेद के कारण बढ़ी है नित्य नए होते गये |" 3

इन विषमताओं ने इतना ही नहीं समाज में व्याप्त वर्ण – भेद ने वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न कर दी थी | एक संप्रदाय के लोग दूसरे संप्रदाय वालों पर ताना कशी कशने में कोई कमी नहीं छोड़ते थे | बालकृष्ण भट्ट कहते हैं , '' एक पंडित जी वर्ण – विवेक पर कुछ वक्तृता कर रहे थे , इतने में एक मसखरा बोल उठा – पंडित जी कुत्ते की क्या जाति है ? हिंदू या मुसलमान | पंडित जी ने जवाब दिया – कुत्ता तो हिंदू मालूम होता है क्योंकि यदि मुसलमान होता तो दूसरे कुत्ते को अपने साथ खिलाने में न भूंकता | " 4

बालकृष्ण भट्ट ने देश की दुर्दशा का मूल कारण जाति व्यवस्था को माना एवं कहा, " एक समय था जबकि जाति - पांति का अलग – अलग होना धर्म का प्रधान अंग था .....इस समय जाति - पांति के झगड़े ही पर देश की फजीहत और सत्यानाश का दारमदार आ लगा है | '' 5 भारतेंदु-युग के समाज में धर्मांधता बढ़ती जा रही थी | वेदादि की गलत व्याख्याएँ दी जा रही थी | इसे भट्ट जी नहीं बर्दाश्त कर सकते थे | धर्म की गलत व्याख्या पर अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा –

''गाज पड़े येसे धर्म पर और येसी समझ में , येसे भगोड़े धर्म को हम कब लीं बांध जकड़े रहेंगे जो जरा जरा में जी छोड़कर भाग जाते हैं | बर्फ पी लिया , बाजार में मिठाई खा लिया धर्म धूल में मिल गया | दूसरे के लोटे में पानी पी लिया भ्रष्ट हो गए – बेईमानी ,फरेब , जालसाजी , झूठ इस में धर्म का कोई जिक्र ही नहीं है | '' 6

यह तथ्य विचारणीय है कि बालकृष्ण भट्ट ने केवल धार्मिक संकीर्णताओं , अंधविश्वासों एवं कुप्रथाओं को ही प्रस्तुत नहीं किया बल्कि धर्म की सही व्याख्या कर जनमानस में नव - जागृति के बीज भी बोए | उन्होंने ' हिन्दी प्रदीप ' में धर्म की सही व्याख्या करते हुए कहा , '' धर्म से हमारा प्रयोजन यह नहीं कि हम किसी एक खास धर्म की प्रशंसा करें और न यही हमारा तात्पर्य है कि हम यह दिखलावें कि अमुक धर्म की बातें बड़ी उत्तम हैं , उसी धर्म पर चलना चाहिए | हमको भिन्न – भिन्न संप्रदाय और मत – मतांतरों के झगड़े से कुछ सरोकार नहीं .....धर्म जितने हैं , उनकी नैव विश्वास पर है धर्म पर नहीं | '' 7 भट्ट जी आगे कहते हैं , " आपस की सहानुभूति , बंधू , प्रेम , देश या जाति की तरक्की का उद्योग आदि धर्म का प्रमुख अंग है | '' 8

सहृदय बालकृष्ण भट्ट की यह बात वर्तमान संदर्भ में विचारणीय लगती है | आज धर्म के नाम पर क्या नहीं हो रहा है ? आपसी सौहार्द की भावना कहाँ है ? लोगों के हृदय में विश्वबंधुत्व की भावना , प्रेम की भावना और सबसे बड़ी बात देश या जाति की तरक्की की भावना कहाँ है ? आज दूसरों को पीछे ढकेल कर आगे बढ़ जाने की प्रवृत्ति बलवति होती जा रही है | हमें सब कुछ मिल जाए , उन्हें न मिले , इस भावना ने प्रचंड रूप धारण कर लिया है | मैं की भावना सर चढ़ कर बोल रही है , तुम तो कहीं है ही नहीं | फिर धर्म में रूढ़िवादिता, अंधविश्वास एवं संकीर्णता क्यों नहीं आयेगी | वह कैसे बचा रह सकता है ? बालकृष्ण भट्ट ने धर्म की सही व्याख्या कर भटके हुए जनमानस को सही मार्ग दिखाया था | धर्म कैसा होना चाहिए ? इस पर उन्होंने कहा , " धर्म ऐसा होना चाहिए जिस पर चलकर समाज में बल आवे – धर्म धृ धातु से बना है जिसका अर्थ धारण या रक्षा के हैं | धर्म पर चलने से हमारी रक्षा नहीं हुई तो उसे धर्म नहीं मानेंगे – जिस बात से देश की उन्नति हो वही धर्म है .....| " 9 इस तरह धर्म की आधुनिक दृष्टिकोण में व्याख्या कर भट्ट जी ने उन सड़ी - गली मान्यताओं को दर – कीनार कर दिया था जिस में अस्पृश्यता एवं संकीर्णता आ गई थी |

बालकृष्ण भट्ट का पत्रकारिता वाला कर्म - छेत्र संघर्षपूर्ण था | उनके पास अर्थ का अभाव हमेशा रहता था | साथ ही ब्रिटिश सरकार की भौहें उन पर तनी रहती थी | जरा सा सरकार विरुद्ध लिखा कि नोटिस भेज दी जाती थी | सदस्य सही समय पर रूपए न भेजते थे | उन्हें सदस्यों से गुहार लगानी पड़ती थी | इतना होने के बावजूद उन्होंने कभी किसी बात की परवाह नहीं की और धड़ल्ले से ' हिंदी प्रदीप ' का संपादन करते रहे | भट्ट जी ने धार्मिक जड़ता को दूर करने के प्रयास में जी – जान लगा दिया था | वैसे ही भारतेंदु – युग में धर्म का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति या परलोक सिधारना रह गया था , इसके विपरीत उन्होंने कहा , " बहुत से लोग

मानते हैं कि धर्म केवल परलोक के साधन के लिए है , हमारे इस जीवन से कोई सरोकार नहीं है – येसा मानने वालों की यह बड़ी भूल है जो अपने इस जीवन को बिगाड़कर परलोक बनाने की फिकिर में है | " 10 इस तरह भट्ट जी ने थोती मान्यताओं , रूढ़ियों और संकीर्णताओं को दूर कर जीवन को सुमधुर बनाने की प्रेरणा दी | उन्होंने विश्वबंधुत्व , भाईचारे , राष्ट्र सेवा , प्रेम अदि को महत्व दिया | बालकृष्ण भट्ट ने धार्मिक चेतना जगाकर जनमानस की जड़ता तोड़ने में जो सराहनीय भूमिका निभाई थी उसे भुलाया नहीं जा सकता है | हिंदी साहित्य उनका सदा ऋणी रहेगा एवं राष्ट्र उनसे सदा प्रेरित होता रहेगा |

वर्तमान संदर्भ में यदि मूल्यांकन किया जाये, तो देखेंगे कि धर्म के नाम पर कमोवेश वही स्थिति बनी हुई है | धर्म के आगे कोई कुछ कहने का साहस नहीं कर पाता है | पंडे - पुजारियों ने जनमानस को आज भी धर्म की दुहाई देकर जकड़ा हुआ है | बाबाओं की भूमिका इसमें कहीं बढ़ -चढ़कर है | आसाराम जैसे पोंगापंथी बाबाओं ने और उनके सुपुत्र ने क्या कम तांडव किया है ? अभी हाल – फिलहाल में हरियाणा के रामपाल बाबा के कृत्य क्या दर्शाते हैं ? जहाँ गरीबी से लोग अन्नाभाव में मर रहे हैं , वहाँ इनके पास कारोड़ों की संपत्ति क्या दर्शाती है ? मंदिरों में , मठों में, दरगाहों में जनमानस को लूटा जा रहा है | ऐसा लगता है कि लोगों की आस्था रूपये के दम पर दाव पर लगी हुई है | पुजारियों , पंडों , बाबाओं , मौलवियों ने अपनी तिजोरियों में ईश्वर को बंद कर रखा है | यदि आपको दर्शन - लाभ लेना है तो कुछ चढ़ावा चढ़ाना होगा , अन्यथा ईश्वर दर्शन का लाभ आप नहीं उठा सकते हैं | साथ ही इन बाबाओं के चक्कर में पड़कर स्त्रियों की आबरू नष्ट हो रही है | फिर भी निरिह जनमानस चुपचाप सहता चला जा रहा है | दरअसल धर्म के आगे सभी विवश हैं | यह कैसा धर्म है ? समझ के बाहर है | सांप्रदायिकता की भावना घटने के स्थान पर और बढ़ती जा रही है | पहले बाबरी मस्जित विवाद , फिर गोधरा कांड और अब मुजफ्फरनगर (उत्तर -प्रदेश) की घटना हमें क्या संदेश दे रही है ? क्या हिंसा कभी ख़त्म नहीं होगी ? खून – खराबा यू ही होता रहेगा ? मासूमों की जान कब तक जाती रहेगी ? इस पर हमें विचार - विमर्श करना होगा |

भारतीय संस्कृति के उपासक जन मन को उद्बोधित करनेवाले बालकृष्ण भट्ट ने अपनि पत्रकारिता के माध्यम से युगीन परिवेश की समस्याओं को समझने और सहज भाव से चिंतन करते हुए कर्म और आचरण करने का संदेश दिया है | ऐसे पथ के अनुसरण से व्यक्तिगत और समष्टिगत उन्नति सम्भव होगी | निश्चय ही जनमानस को धर्म के ठेकेदारों से सावधान रहने की आवश्यकता है | तभी जाकर हम राष्ट्र का एवं अपना कल्याण कर पाएँगे | यदि हमें पूरे विश्व में अपनी छवि को उच्च मानदंड पर स्थापित करना है, तो धर्म से संबंधित दकियानूसी विचारों को दूर करना होगा | आपसी सौहार्द की भावना विकसित कर प्रेम , विश्वबंधुत्व , त्याग की भावना रखनी होगी | ऐसा सत्य पथ के राही बनने पर ही हम सही तौर पर मानव कहलावेंगे | पूरे विश्व को बता देना होगा कि हमारा धर्म और हमारी संस्कृति ,वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावभूमि पर विकसित हुई है | इस प्रकार ही जनमानस का कल्याण होगा | निश्चय ही गंभीर चिंतक भट्ट जी की पत्रकारिता में भारतीय संस्कृति की पावन धारा बहती है |

संदर्भ :

1. डॉ अजबनारायण पांडेय , सामाजिक क्रांति की दिशाएँ और भारतेंदु हरिश्चंद्र , प्रथम सं. 1988 , सुदर्शन मुद्रक , वाराणसी: पृष्ठ . 65,
2. डॉ (श्रीमती) आरती सिंह , नवोत्थानवादी चेतना और भारतेंदु , प्रथम सं. , वाराणसी 2007 ,: संजय बुक सेंटर , पृष्ठ . 26
3. डॉ वंशीधर . लाल, भारतीय स्वतंत्रता और हिन्दी पत्रकारिता , प्रथम सं. , पटना ,1989: बिहार ग्रन्थ कुटीर , पृष्ठ . 96
4. वही , पृष्ठ . 96
5. डॉ मीरा बल, राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता , प्रथम सं. , नई दिल्ली,1994 : वाणी प्रकाशन , पृष्ठ .165
6. डॉ वंशीधर लाल, भारतीय स्वतंत्रता और हिन्दी पत्रकारिता , प्रथम बार , पटना,1989 : बिहार ग्रन्थ कुटीर , पृष्ठ . 111
7. वही , पृष्ठ .113
8. डॉ मीरा बल, राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता , प्रथम सं. , नई दिल्ली,1994 : वाणी प्रकाशन , पृष्ठ. 151
9. वही , पृष्ठ. 152
10. वही , पृष्ठ.152